

ॐ मेघपासावधि
॥ ॥

Amoghapaśavidhi

धर्मरत्न बज्राचार्यं सुरत श्री महाबिहार

DH 103

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ आहं ॥ श्रीमन्वज्रसत्त्वगुणव
नचनक्षकमलाय ॥ ॐ ॥ यथापनिगतं नार्थं ॥ यद्यहं सज्जग
धनं ॥ आर्यावलाकिं न ॥ नमहं वंदः ॥ सर्वसत्त्वानुकंपकं ॥ ततो इ
खमकलानयंकमग्नजगद् ॥ धृष्टं ॥ सखावत्त्वां लाकधा गोः ॥ १
प्रतिष्ठापयितव्या ॥ ॐ आहं ॥ ॐ ॥ रावसूहासर्वधर्मात्मस्व
रावशुद्धाहं ॥ ॐ शुभं नमो भगवते स्वरावात्मकाहं ॥ मरिचि सर्व
सत्त्वाधनक्षहता ॥ श्रीकावक्ष ॥ श्रीमाधवा ॥ श्रीलोकस्वने ॥ श्रीत्मानं राव

ॐ ॥ ॥ दक्षिणहस्त ॥ श्रीकावक्ष ॥ सूर्यमंडलं ॥ वासहस्त ॥ श्रीकावक्ष
चंद्रमंडलं ॥ हंकावक्ष ॥ यंचसूचीकवजं ॥ विराव्या ॥ ॐ ॥ जनेवीनाय स्वाहा
॥ ॐ ॥ ऊयाय स्वाहा ॥ ॐ ॥ विजयाय स्वाहा ॥ ॐ ॥ ऊयविजयाय स्वाहा ॥ ॐ ॥
न ॥ नमो भगवते श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ ॥ नमः ॥ कमलावर्तनपी स्वा
धिष्ठान ॥ ॐ ॥ चल २ चिलि २ चल २ मल २ मिलि २ मूल २ महाका न
क्षीक सर्वविघ्ना वत्सानय हं ॥ ॐ ॥ सर्वविघ्ना गगनपूजा मधु प्रवन स
मूह मूह हि गगल कहं ॥ ॐ ॥ हादीय ॥ कन २ हं २ रुनू २ गीधी स्वाहा ॥ गीधी ॥

ॐ बनश्च नृदायक हं ह॥ ४ नैव धं प्रणिष्ठ स्वाहा ॥ नैव धा ॥ ॐ वज्र पूष्य
स्वाहा ॥ ॐ जूका नमस्त्व सर्व धर्मानां माद नृप नत्वा ॥ बलि ॥ ॐ वज्र य
जुहं ॥ रुम ॥ ॥ ॐ स्वा नम नृक हं ॥ ॐ योग मे नृक हं ॥ ॐ ज्ञात्वा
नम नृक हं ॥ ॥ लावना ॥ ॥ तत्स्व रुदय जूका नैव चंद्र मे
उमा ॥ तद्रूप निद्रा कानं नृ न ॥ ॥ स्मि विलुपि नैव दस दिग् लोक
धातु गत्वा ॥ जूमा घषा लाक वनै प्रणिष्ठार्प्य ॥ तद्रु स्मि संहा नैव धा पू
ना ॥ उर्ध्व गत नस्मि विस्म नं नैव सखा वति लोक धातु गत्वा ॥ जूमा घषा

ॐ लोकेश्वर नमोऽस्तु ॥ तदस्मिन्माधुल्यमानीयहृद्यं उर्वरदाय
स्वाहा ॥ ॐ सन २ रुन २ रुगावन धन २ समय मनूस्सन हंह स्वाहा ॥ ॐ
जुमाघपाठा लोकेश्वर नमोऽस्तु नमोऽस्तु पायंजुर्घं ज्ञानमननं पांक्रम
नमोऽस्तु स्वाहा ॥ ॐ हंह स्वाहा ॥ ॐ पूष्यन्यास ॥ ॐ जुमाघपास
लोकेश्वर नमोऽस्तु वरुण पूष्यपति ॥ स्वाहा ॥ ॐ हंह लोकेश्वर
यजुमाघपासपति हंह स्वाहा ॥ ॐ हंह रुद्र स्वाहा ॥ ॐ जुमाघपाठा
हंह स्वाहा ॥ दधू ॥ ॐ जुमाग्निनाथ वरुण पूष्यपति ॥ स्वाहा ॥ रुद्र ॥

ॐ नानाय वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ खडा स ॥ ॐ हृदय वज्र पूष्यं प्रतीकं
 स्वाहा ॥ ऊडा स ॥ ॐ आ जू मा घां कृ ॥ य वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥
 ऊडा न ॥ ॐ आ वृ कृ नाय वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ खडा का कृत स ॥
 ॐ आ ह्ययी वाय वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ ऊडा का क्ष स ॥
 ॐ नं पि पूर्व धान निस्पं ऊडा पा ॥ ॐ नं उय कं वाय ॥ ॐ मे गी य
 वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ ॐ आर्य गग क्ष गी जाय वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वा
 हा ॥ ॐ आर्य समंत रुडा य वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ ॐ आर्य वज्र पा

क्षय वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ ॐ आर्य मं रु धा वाय वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वा
 हा ॥ ॐ आर्य सर्व नी व क्ष विस्वं ह्य वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ ॐ आ
 र्य कि ति ग र्हा य वज्र पूष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ ॐ आर्य र्वा ग र्हा य वज्र पू
 ष्यं प्रतीकं स्वाहा ॥ ॥ वा ह ॥ पूर्वादि ॥ ला क पा ल ॥ ॐ ॐ ॐ डा
 य स्वाहा ॥ ॥ या दि ॥ ॥ यं लां घं लु ति न र्थ ॥ ॐ ॐ ॐ का न सं रु व ना
 थ क व क्ष र्थ स चि मा न सं जू मा घ षा ॐ ना मा ना ला क ना र्थ न मा मि
 हे ॥ पा य द क्ष ना ॥ न ना मे गी क व क्ष मू दि ता ष का मि च नु वं ष वि हा

मान हावयत समस्तकावनर्तगमपदार्थस्वसनीनंचदव्यक्षप्रति
 विम्बेवत्विचित्रं स्वदृष्टीकृत्किंनलोस्मिन्नृत्तं ॥ १ ॥ न्यायालीनं स्ववि
 रुमधिकाय ॥ ॐ विलादयहं ॥ समुद्रनलावनहं ॥ नलगुहाया ॥ ॐ
 कमलार्तहं ॥ यथा ॥ ॐ जूमिता ॥ ॐ वायस्वाहा ॥ वाधिविरुन्द
 विरुयगर्ह ॥ ॐ जालिकालि ॥ ॐ स्वरावसूर्यवन्दसूर्यसंय
 ॥ ॐ सूर्यकीकानं समुत्पन्नं यद्यं तद्विजाधिष्ठितं पंचहानकम्पल
 गवंतं ॥ अमाघया ॥ लोकावनविष्णु ॐ पति ॥ समयदस्तिनं सर्व

गवं शुक्लं नकमखेनपसिवसधनी ॥ असूरुजं दकि ॥ असूरुयवनरा
 पा ॥ अमाधनं वाम ॥ तिसलदक्ष ॥ पूरुक ॥ यप्र ॥ कमलुधनं ॥ ॐ
 यमकृष्टिनं जूमिताहृष्ट ॥ ॐ ॥ ॐ वनं हावयत ॥ ॐ हावंगासव्य
 ना ॥ ॐ ॥ मावर्षाद्विरुजादकि ॥ ॐ ॥ ॐ वजदा ॥ वामनीलात्यनध
 ना ॥ सर्वालकान रविता ॥ वामरुक्मिणी ॥ पीतवर्षा ॥ चरुर्जुजा ॥ दकि
 प्रथमरुज ॥ ननवनद ॥ द्वितीयन ॥ हावर्त ॥ तमस्कानं रुक्म ॥ वामपु
 थमरुज ॥ न ॥ पालिजानपूष्य ॥ द्वितीय ॥ असूरुमालाधनं ॥ हावर्तः

पूनत जूमाघां कृष्ण नक्त वर्षे अक्रुधा पासधनं सखत कुमानक न
 कण्ठेन वर्षे कनपूरं जलि घृष्टा पा नमिता पूरु कधनं ह्यपी व
 नक्त वर्षे दिहृजं दक्षिण रुजन रुगावत नमस्कानं कृतं वामरुजं
 नपघधनं नतावहि पूर्व मेरी ॥ यपीत वर्षे नागपुष्प धनं ग
 गल गजं धीनपीतस्क धर्म ॥ गजधनं समं गहद पित वर्षे
 नलमैजलि धनं वजपासि धीनपीत वजहसं मैरुघाघ कृष्णमव
 र्हे नीलात्यन धनं सर्वनि वर्षे विस्कंति ग्पासवर्षे विश्व वजह

संकिर्तिगर्ह धीनवर्षे चक्रधनं रवगर्ह नीलवर्षे नक्त नलधनं ॥ ॥
 नतां जंगत्यास ॥ उं कयाय स्वाहा ॥ उं विजयाय स्वाहा ॥ उं जयविजया
 य स्वाहा ॥ उं आहं ॥ त्रिकाया धिष्ठान ॥ तनस्वददयं अकानं सचन्द्र
 मधुलं तदयनि कौकानं स ॥ इस्मि विरुचिं दधदि एला क
 धा रुगत्वा जूमाघ पाथलीक ॥ धनं मधुलं समानिय दद्याः
 ॥ ॥ अहिषक पार्थयत् ॥ ऊथहि त्यादि ॥ सर्ववृद्ध वृत्तामसि त्या
 दि ॥ मकुरा ॥ उं वज्रधनं धनि त्यादि ॥ पंचाहिषक ॥ उं हं उं हाः उं

वति लोकधनुषवलयत् ॥ पू. पं. लां. घं. सु. ॥ सताऊन ॥ मृषाफ
वाद्यादि ॥ विसर्जन ॥ ॐ ॥ नूति मृमाघपासपूजाविधिः
समाप. ४ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DM 103